Today's Poem – 14.05.2014

इस जन्म के पापों से हल्का होने के लिए बाप को सच-सच सुनाओ

पिछले जन्मों के विकर्मों को योग अग्नि से जलाओ

ख़ुदाई खिदमतगार बनने के लिए होना चाहिए फुरना

हमें याद की यात्रा में रहकर पावन ज़रूर है बनना

मुरली सुनकर फिर सुनानी है

बैज मैसेन्जर की निशानी है

पढ़ने के साथ-साथ पढ़ाना भी है ,कल्याणकारी बनना है

विश्व में शान्ति स्थापन करने के लिए याद की यात्रा में रहना है

जहाँ मेरा आया

वहाँ बुद्धि का फेरा हुआ

भगवान के बच्चे कभी उलझनों में नहीं आ सकते

बड़े बाप के बच्चे छोटी बातों में नहीं घबराते

मेरा बाबा !!

ॐ शान्ति !!!